

जय माता की

बद्री भक्त झण्डेवाला देवी मंदिर



श्री आदि शक्ति माँ झण्डेवाली

माँ झण्डेवाली मंदिर के कार्यक्रमों की सूची

मंदिर खुलने का समय— प्रातः 5.00 बजे (ग्रीष्मकाल)
प्रातः 5.30 बजे (शीतकाल)

रविवार, मंगलवार व अष्टमी के अतिरिक्त मंदिर
दोपहर 1 बजे से सायं 4 बजे तक बंद रहता है

आरती

भोग

मंगल आरती	सूखा मेवा प्रातः 5.30 बजे ग्रीष्मकाल प्रातः 6.00 बजे शीतकाल
श्रृंगार आरती	चीले, चने, दूध, नारियल प्रातः 9.00 बजे
भोग आरती	चावल, दाल, रोटी दोपहर 12.00 बजे
सायं आरती	चने 8.00 बजे ग्रीष्मकाल 7.30 बजे शीतकाल
शयन आरती	दूध रात्रि 10.00 बजे ग्रीष्मकाल रात्रि 9.30 बजे शीतकाल

- ★ प्रातः प्रतिदिन मंदिर में हवन कीर्तन होता है।
- ★ माँ झण्डेवाली मंदिर का मण्डल प्रत्येक शुक्ल पक्ष की अष्टमी को रात्रि 10 बजे मंदिर में जागरण करता है तथा प्रत्येक मंगलवार को सायं कीर्तन करता है।
- ★ भोग व श्रृंगार आरती में सेवा के लिए मंदिर कार्यालय से सम्पर्क करें।

ग्रीष्मकाल — चैत्र नवरात्र से आश्विन नवरात्र
शीतकाल — आश्विन नवरात्र से चैत्र नवरात्र

जय जगदम्बे

भक्तवर, यह पावन पुस्तक माँ भगवती की असीम कृपा एवं दिव्य प्रेरणा का सुफल है। करुणामयी माँ भवानी के स्तवन हेतु पावन स्तोत्रों एवं दिव्य मंत्रों का संकलन महान पौराणिक ग्रंथों से किया गया है। जगदम्बा के परम भक्तों एवं भारत के महान ऋषियों द्वारा रचित इन अनुपम स्तोत्रों एवं मंत्रों में सर्वकष्ट निवारण तथा सर्वमंगल प्रदान करने की अदभुत शक्ति निहित है।

यद्यपि इनके पठन, लेखन एवं उच्चारण में कोई अशुद्धि न हो, इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है। तथापि किसी भी प्रकार के सुझाव एवं संशोधन हेतु मंदिर कार्यालय से सम्पर्क करें।

बद्री भक्त झण्डेवाला देवी मंदिर

श. झण्डेवाला मंदिर, नई दिल्ली-110055

(संस्करण नं. १०००)

सं. ३२१

विश्व की रक्षा के लिए



या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥



महालक्ष्मी स्वयं पुण्य आत्माओं के
घर में लक्ष्मी रूप में, पापियों के हृदय
में अलक्ष्मी रूप में, दृढ़ निश्चयी पुरुषों
के हृदय में बुद्धि रूप में; सत् पुरुषों
के हृदय में श्रद्धा रूप में, कुलीन जनों
में लज्जा रूप में निवास करती है।



मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ। हे देवि!
विश्व का पालन करो।



विषय-सूची

मंगलम्	5
बीज मंत्र	6
माँ दुर्गा के १०८ नामों की माला	7
माँ दुर्गा के ३२ नाम	9
जयकारा	11
महारानी जी की अरदास	12
स्तुति	14
जागरण ज्योति प्रज्वलित करने की स्तुति	16
गिरिजादशकस्तोत्रम्	17
मंगलाचरण	19
अथ चण्डी चरित्र	20
एकादश श्लोक	22
देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्	24
देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् (हिन्दी)	27
सिद्धकुब्जिकास्तोत्रम्	30
अथार्गलास्तोत्रम्	32
श्री भगवतीस्तोत्रम्	36
अथ देव्याःकवचम्	38
अथ कीलकम्	45
आनन्दलहरी	49
अथ दुर्गा चालीसा	55
अथ विश्वेश्वरी चालीसा	57
महारानी जी की आरती	59
अम्बा जी की आरती	60
देवी जी की आरती	61
माँ भगवती की शयन आरती	62
देवीमयी	63
क्षमा प्रार्थना	64

कर्तव्य



संतोषस्त्रिषु कर्तव्यः स्वदारे भोजने धने।
त्रिषु चैव न कर्तव्यः स्वाध्याये जपदानयोः॥



स्त्री, भोजन और धन के विषय में
संतोष करना चाहिए, क्योंकि ये तो
पूर्व-जन्मों के कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त
हुए हैं।



स्वाध्याय, जप और दान में संतोष
नहीं करना चाहिए, क्योंकि वे नये कर्म
हैं। उनमें यदि कोई संतोष करेगा तो वह
कर्तव्य से च्युत हो जाएगा।

अतः कर्तव्य कर्म में तत्परता से
सदा लगे रहना चाहिए।



मंगलम्

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम्॥१॥

उन गजवदन देव देव की जय हो, जिनके
चरणकमल का स्मरण सम्पूर्ण विघ्नसमूह को इस प्रकार
नष्ट कर देता है जैसे सूर्य अन्धकार राशि को॥१॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो

गजकर्णकः ।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो

विनायकः ॥२॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो

गजाननः ।

द्वादशैतानि नामानि यः

पठेच्छृणुयादपि ॥३॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे

तथा ।

संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न

जायते ॥४॥

जो पुरुष विद्यारम्भ, विवाह, गृहप्रवेश, निर्गमन (घर
से बाहर जाने), संग्राम अथवा संकट के समय सुमुख,
एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्न-
नाशन, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और

गजानन—इन बारह नामों का पाठ या श्रवण भी करता है, उसे किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता॥२-४॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोंपशान्तये ॥५॥

जो श्वेत वस्त्र धारण किये हैं, चन्द्रमा के समान जिनका वर्ण है तथा जो प्रसन्न वदन हैं, उन देव देव चतुर्भुज भगवान् विष्णु का सब विघ्नों की निवृत्ति के लिये ध्यान करना चाहिये॥५॥

बीज मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

ॐ श्री ॐ

माँगूं में झोली पसार दीजे माई अन्नपूर्णा।

ॐ श्री ॐ

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

॥ श्री दुर्गायै नमः॥

माँ दुर्गा के १०८ नामों की माला

१. ऊँ सती २. साध्वी ३. भवप्रीता (भगवान् शिवपर प्रीति रखने वाली) ४. भवानी ५. भवमोचनी (संसार बन्धन से मुक्त करने वाली) ६. आर्या ७. दुर्गा ८. जया ९. आद्या १०. त्रिनेत्रा ११. शूलधारिणी १२. पिनाकधारिणी १३. चित्रा १४. चण्डघण्टा (प्रचण्ड स्वर से घण्टानाद करने वाली) १५. महातपाः (भारी तपस्या करने वाली) १६. मनः (मनन-शक्ति) १७. बुद्धिः (बोधशक्ति) १८. अहंकारा (अहंता का आश्रय) १९. चित्तरूपा २०. चिता २१. चितिः (चेतना) २२. सर्वमन्त्रमयी २३. सत्ता (सत्-स्वरूपा) २४. सत्यानन्दस्वरूपिणी २५. अनन्ता (जिनके स्वरूप का कहीं अन्त नहीं) २६. भाविनी (सबको उत्पन्न करने वाली) २७. भाव्या (भावना एवं ध्यान करने योग्य) २८. भव्या (कल्याण रूपा) २९. अभव्या (जिससे बढ़कर भव्य कहीं है नहीं) ३०. सदागतिः ३१. शाम्भवी (शिवप्रिया) ३२. देवमाता ३३. चिन्ता ३४. रत्नप्रिया ३५. सर्वविद्या ३६. दक्षकन्या ३७. दक्षयज्ञविनाशिनी ३८. अपर्णा (तपस्या के समय पत्ते को भी न खाने वाली) ३९. अनेकवर्णा (अनेक रंगों वाली) ४०. पाटला (लाल रंगवाली) ४१. पाटलावती (गुलाब के फूल या लाल फूल धारण करने वाली) ४२. पट्टाम्बरपरीधाना (रेशमी वस्त्र पहनने वाली) ४३. कमलज्जीररज्जिनी (मधुर ध्वनि करने वाले मञ्जीर को धारण करके प्रसन्न रहने वाली)

४४. अमेयविक्रमा (असीम पराक्रम वाली) ४५. क्रूरा (दैत्यों के प्रति कठोर) ४६. सुन्दरी ४७. सुरसुन्दरी ४८. वनदुर्गा ४९. मातङ्गी ५०. मतङ्ग मुनिपूजिता ५१. ब्राह्मी ५२. माहेश्वरी ५३. ऐन्द्री ५४. कौमारी ५५. वैष्णवी ५६. चामुण्डा ५७. वाराही ५८. लक्ष्मीः ५९. पुरुषाकृतिः ६०. विमला ६१. उत्कर्षिणी ६२. ज्ञाना ६३. क्रिया ६४. नित्या ६५. बुद्धिदा ६६. बहुला ६७. बहुलप्रेमा ६८. सर्ववाहनवाहना ६९. निशुम्भशुम्भहननी ७०. महिषासुरमर्दिनी ७१. मधुकैटभहन्त्री ७२. चण्डमुण्डविनाशिनी ७३. सर्वासुरविनाशा ७४. सर्वदानवघातिनी ७५. सर्वशास्त्रमयी ७६. सत्या ७७. सर्वास्त्रधारिणी ७८. अनेकशस्त्रहस्ता ७९. अनेकास्त्रधारिणी ८०. कुमारी ८१. एककन्या ८२. कैशोरी ८३. युवती ८४. यतिः ८५. अप्रौढा ८६. प्रौढा ८७. वृद्धमाता ८८. बलप्रदा ८९. महोदरी ९०. मुक्तकेशी ९१. घोररूपा ९२. महाबला ९३. अग्निज्वाला ९४. रौद्रमुखी ९५. कालरात्रिः ९६. तपस्विनी ९७. नारायणी ९८. भद्रकाली ९९. विष्णुमाया १००. जलोदरी १०१. शिवदूती १०२. कराली १०३. अनन्ता (विनाश रहिता) १०४. परमेश्वरी १०५. कात्यायनी १०६. सावित्री १०७. प्रत्यक्षा १०८. ब्रह्मवादिनी

दुर्गाजी के इस अष्टोत्तर शत नाम का जो प्रतिदिन पाठ करता है, उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं है।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

माँ दुर्गा के ३२ नाम

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्मनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी॥
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला॥
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता॥
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी॥
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी॥
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी।

- | | |
|-----------------------|--------------------|
| १. दुर्गा | ५. दुर्गसाधिनी |
| २. दुर्गार्तिशमनी | ६. दुर्गनाशिनी |
| ३. दुर्गापद्मनिवारिणी | ७. दुर्गतोद्धारिणी |
| ४. दुर्गमच्छेदिनी | ८. दुर्गनिहन्त्री |

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| ९. दुर्गमापहा | २१. दुर्गमगा |
| १०. दुर्गमज्ञानदा | २२. दुर्गमार्थस्वरूपिणी |
| ११. दुर्गदैत्यलोकदवानला | २३. दुर्गमासुरसंहन्त्री |
| १२. दुर्गमा | २४. दुर्गमायुधधारिणी |
| १३. दुर्गमालोका | २५. दुर्गमाङ्गी |
| १४. दुर्गमात्मस्वरूपिणी | २६. दुर्गमता |
| १५. दुर्गमार्गप्रदा | २७. दुर्गम्या |
| १६. दुर्गमविद्या | २८. दुर्गमेश्वरी |
| १७. दुर्गमाश्रिता | २९. दुर्गभीमा |
| १८. दुर्गमज्ञानसंस्थाना | ३०. दुर्गभामा |
| १९. दुर्गमध्यानभासिनी | ३१. दुर्गभा |
| २०. दुर्गमोहा | ३२. दुर्गदारिणी |

जब कोई मनुष्य शत्रुओं से पीड़ित हो अथवा दुर्भेद्य बन्धन में पड़ा हो, इन बत्तीस नामों के पाठ मात्र से संकट से छुटकारा पा जाता है। इसमें तनिक भी संदेह के लिये स्थान नहीं है। यदि राजा क्रोध में भरकर वध के लिये अथवा और किसी कठोर दण्ड के लिये आज्ञा दे दे, या युद्ध में शत्रुओं द्वारा मनुष्य घिर जाय अथवा वन में व्याघ्र आदि हिंसक जन्तुओं के चंगुल में फँस जाए, तो इन बत्तीस नामों का एक सौ आठ बार पाठ करने मात्र से वह सम्पूर्ण भयों से मुक्त हो जाता है।

जयकारा

झण्डे वाली माता तेरी सदा ही जय,
शेराँ वाली माता तेरी सदा ही जय।
जोताँ वाली माता तेरी सदा ही जय,
भवनाँ वाली माता तेरी सदा ही जय॥

जय-जय झण्डे वाली बोलो, जय जय शेराँ वाली।
दाती के दरबार से भक्तों, कोई ना लौटा खाली॥

जयकारा बोलो जी, कभी ना डोलो जी।
बोलो जी, बोलो जी, जय जय जय जय।
सच्चे मन से एक बार जो, माँ का जयकारा बोले।
जन्म-जन्म के बंधन काटे, द्वार खुशियों के खोले।
माता माता हर कोई बोले, मैं भी बोलूँ माता।
माता की कृपा से बंदा, भवसागर तर जाता।
बिगड़ी माँ तकदीर बनाये, सोये भाग जगाती।
जहाँ जहाँ जयकारे लगते, वहीं वहीं माँ आती।
धरती बोले अम्बर बोले, बोले ये जग सारा।
सारे देवी देवताओं से, माँ का नाम प्यारा।
घर घर में है माँ की महिमा, गली गली जगराते।
भक्त सभी हैं माँ के, मैया के गुण गाते।

महारानी जी की अरदास

सोम सोम दे भरे भण्डारे तेरे,
मंगल मेहर दा बख्खो दान माता।
बुध बुद्धि दे विच प्रकाश होवे,
वीर वीरता दा बख्खो दान माता।
शुक्र शुक्र करां तेरा हर वेले,
शनि शान्ति दे होन समान माता।
ऐतवार विश्वास यकीन होवे,
पूर्ण कर दो सारे काज माता।
ऐ माता मातेश्वरी सर्व सुखों की खान,
माँ देवन वाली एक है मांगत सारा जहान।
आज वी तेरा आसरा कल वी तेरी आस,
घड़ी घड़ी माँ आसरा ज्येष्ठ बारह मास।
मेरी दाती के दरबार में सभी खड़े हाथ जोड़,
माँ देवन वाली एक है माँगत लख करोड़।
ऐत अम्बिका जी हिंगलाज ज्वाला माँ,
तेरा पर्वता दे विच दरबार माँ,
सोम सरस्वती कालका भद्रकाली,
तैनू सिमरदां कुल संसार माता।

मंगल मनसा देवी तू है पिंड रानी,
 समय समय ते लेवे अवतार माता।
 बुध वीर दा भरी महान शक्ति,
 बगे शेर ते होवे सवार माता।
 वीर वैष्णो देवी नैना देवी मैया,
 लखाँ भक्ता दित्ते ने तार माता।
 शुक्र शक्ति भवानी कृपालु है तू,
 कई जालिमा नू दित्ता है मार माता।
 शनि शान्ति रूप महान दुर्गे,
 तैनू भक्त सिमरण सतेवार माता।
 तेरे चरणा तो जावां बलिहार माता,
 रूप ईक ते नाम अनेक तेरे।
 मेहर करो मातेश्वरी आये तेरे द्वार,
 रख लाज दाती आन के पड़े द्वार तेरे।

प्रेम से बोलो जय माता दी सारे बोलो जय माता दी
 जोर से बोलो जय माता दी पहाड़ां वाली जय माता दी
 मेहरां वाली जय माता दी शेरों वाली जय माता दी
 जय माता दी जय माता दी जय माता दी

स्तुति

मेरे रोम-रोम में बस जाओ माँ
तेरे बिन मेरा कोई नहीं,
पहाड़ां वाली अर्ज करो मंजूर
सुचियाँ जोताँ वाली अर्ज करो मंजूर।

अवगुण बहुत मैया कोई गुण नाही
दर डिगयाँ दी देवा फड़ले तू बांही
बक्श दे मेरे कसूर बक्शन वाली अर्ज करो मंजूर।

चारो पासे छाया मैया घोर अंधेरा
इस दुनियां विच कोई न मेरा
तू माँ मेरी मैं बछड़ा तेरा
तुहियों बन्धावे माँ धीर पहाड़ां वाली अर्ज करो मंजूर।

उच्यां पहाड़ां उते मेले लाण वालिए
आशा तू पूर्ण करदे सुए चोलयां वालिए
आस पुजावणा जरुर पहाड़ां वाली अर्ज करो मंजूर।

दुःख ने भतेरे मैया कहे नइयो जांवदे
इस जिंदड़ी दे उते सहे नइयो जांवदे
कर दे दिलां दे दुःख दूर पहाड़ां वाली अर्ज करो मंजूर।

छम-छम अखियां दां नीर पया आंवदा
 लाल नमाणा तेरे तरले पया पांवदा
 भवन ते बुलावणा जरूर पहाड़ां वाली अर्ज करो मंजूर।

दुखां वेले आदियां ने जदों याद मावाँ
 माई बिन केड़ा पूछे दिला दियाँ आह्वाँ
 करदे दिलां दे दुःख दूर पहाड़ां वाली अर्ज करो मंजूर।

न पूजा न पाठ समाधि
 जन्म-जन्म दा मैया मैं अपराधी
 बक्श दे मेरे कसूर पहाड़ां वाली अर्ज करो मंजूर।

मैं अनतारु देवा तरण न जाना
 भरया ए नीर मैया बेड़ा है पुराना
 पार लगावणा जरूर पहाड़ां वाली अर्ज करो मंजूर।

विच थाली दे अम्बे जोत जगाई
 गैदे ते गुलाब नाल आरती सजाई
 चरणो माँ लवणा जरूर पहाड़ां वाली अर्ज करो मंजूर।

दर तेरे उत्ते मैया आये गुनहगार माँ
 बक्श देवी दातिए असी भुलनहार माँ
 बक्श दे मेरे कसूर पहाड़ां वाली अर्ज करो मंजूर।

जागरण ज्योति प्रज्वलित करने की स्तुति

तुम्हरे भवन पर ज्योति जागे, ज्योति जागे मेरे पाप भागे।
आनन्द मंगल हो रहे मेरी अम्बा॥८॥

ब्रह्मा जी वेद पढ़ें तेरे द्वारे, शंकर ध्यान लगाय।
मैया के द्वारे शंकर ध्यान लगाय मेरी अम्बा॥९॥

नारद नृत्य करे तेरे द्वारे, कान्हा बीन बजाय।
मैया के द्वारे कान्हा बीन बजाय मेरी अम्बा॥१०॥

पंचरंग सुआ चोला अंग विराजे, लाल किनारी लगाए।
मैया के चोले लाल किनारी लगाय मेरी अम्बा॥११॥

गल फूलों के हार विराजे, केसर तिलक लगायें।
मैया के माथे केसर तिलक लगाय मेरी अम्बा॥१२॥

सिर सोने दा छत्र विराजे, हीरे रतन जड़ाय।
मैया के छत्र हीरे रतन जड़ाय मेरी अम्बा॥१३॥

बावन वीर चौंसठ संग योगन, भैरों चँवर ढुलाय।
मैया का बाबा भैरों चँवर ढुलाय मेरी अम्बा॥१४॥

लोकड़ वीर भवन के आगे, गोरख नाद बजाये।
मैया के द्वारे गोरख नाद बजाय मेरी अम्बा॥१५॥

सुमर चरण तेरा ध्यानूं जस गावे, बाने पैज निभाय।
मैया जी मेरे बाने पैज निभाय मेरी अम्बा॥१६॥

गिरिजादशकस्तोत्रम्

ॐ मन्दार कल्प हरि चन्दन परिजात
मध्ये शशांक मणि-मंडित वेदि संस्थे
अर्धेन्दु मौलि सुललाट षष्ठ्य नेत्रम्
भिक्षां प्रदेहि गिरिजे क्षुधिताय मह्यम् ॥१॥

आली कदम्ब परिशोभित पार्श्व भागे
शक्रादयो मुकुलिताञ्जलयः स्तुवन्ति
देवि त्वदीय चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥२॥ भिक्षां....

केयूर हार मणि कंकण कर्ण पूरे
कांची कलाप मणि कान्ति लसद् दुकूले
दुग्धान्न पूर्णवर काँचन दर्विहस्ते ॥३॥ भिक्षां....

सद् भक्त कल्पलतिके भुवनैक वंद्ये
भूतेश हस्तकमल लग्न कुचाग्र भृंगे
कारुण्य पूर्ण नयने किमुपेक्षसे माम् ॥४॥ भिक्षां....

शब्दात्मिके शशिकला भरणार्थ देहे
शम्भोरुस्थल निकेतन नित्य भासे
दारिद्र्य दुःख भयहारिणी कात्वदन्या ॥५॥ भिक्षां....

लीला वचांसि तव देवि ऋगादिवेदाः
 सृष्ट्यादि कर्म रचना भवदीय चेष्टा
 त्वत् तेजसा जगदिदं प्रति भाति नित्यम् ॥६॥ भिक्षां....

वृन्दार वृन्द मुनि नारद कौशिकात्रि
 व्यासाम्बरीष कलशोद्भव कश्यपाद्याः
 भक्ताः स्तुवन्ति निगमागमसूक्त मंत्रैः ॥७॥ भिक्षां....

संध्यालये सकल भूसुर सेव्यमाने
 स्वाहा स्वधादि पितृदेवगणार्तिहंत्री
 जाया सुता परिजनातिथयोन्न कामाः ॥८॥ भिक्षां....

एकात्म मूल निलयस्य महेश्वरस्य
 प्राणेश्वरी प्रणत भक्त जनाय शीघ्रम्
 कामाक्षिरक्षित जगत त्रितयेऽन्नपूर्णे ॥९॥ भिक्षां....

अम्ब त्वदीय चरणाम्बुजसेवनेन
 ब्रह्मादयोपि विपुलां श्रियमाश्रयन्ते
 तस्मादहं तव नतोऽस्मि पदारविन्दम् ॥१०॥ भिक्षां....

भक्ता पठन्ति गिरिजा दशकं प्रभाते
 कामार्थिनो बहुधनान् समृद्धि कामाः
 प्रीत्या महेशवनिता हिमशैलकन्या
 तेभ्यो ददाति सततं मनसेप्सितानि।

मंगलाचरण

सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२॥

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥३॥

विष्ण्वेश्वरी जगन्मातः भक्तानुग्रहकारिणी ।
बद्धी भक्त नुते देवी झण्डेवाली नमोऽस्तु ते ॥४॥

सरस्वती महाविद्या वीणापुस्तकधारिणी ।
हंसवाहिनी समारुढ विद्या बुद्धिं ददातु मे ॥५॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥६॥



अथ चण्डी चरित्र

श्री भाल लसत विशाल शशि मृग मीन कंचन लोचनी।
बाल वदन विशाल कोमल वचन बिघ्न विमोचनी॥
सिंह वाहन धनुष धारण कनक से तन सोहनी।
मुण्ड माल उरोज राजत मुनिन के मन मोहनी॥
एक रूप अनेक तेरे गुणन की गिनती नहीं।
कुछ ज्ञान था न अजान भक्तिन भाव से विनती करी॥
वर विष्णु नवधा खड्ग खप्पर अभय अंकुश धारिणी।
कर काज लाज जहान जननि जनन के हित कारिणी॥
मन्दहास प्रकाश चण्डी सी विन्ध्यवासिनी गाड़ये।
क्रोध तज अभिमान पर और दुष्ट बुद्धि नसाड़ये॥
उठत बैठत चलत सोवत बार-बार मनाड़ये।
चण्ड मुण्ड विनाशिनी के चरण हित चित लाड़ये॥
चरण मुनि और बिन्दु हूते अधिक आनन्द रूप हैं।
सर्व सुख दाता विधाता सर्व दर्श अनूप हैं॥
तू ही योग भोग विलासिनी शिवपास हिमगिरी नन्दिनी।
तुरत दुःख निवारिणी जग तारिणी अभिनन्दनी॥
आदि माया ललित काया प्रथम मधुकैटभ छले।
त्रिभुवन भार उतारवे को मान महिषासुर मले॥
इन्द्र चन्द्र कुबेर वरुण सुरन के आनन्द भये।
भुवन चौदह दसों दर्शन के सुनत ही सब दुःख गये॥

धूम्र लोचन भस्म कीनो क्रोध के हुँकार से।
 हनी है सेना सकलता की सिंह की भवङ्कार से॥
 चण्ड मुण्ड प्रचण्ड दोऊ प्रबल सोई भ्रष्ट हैं।
 मुण्ड उनके किये है खण्डन असुर मुण्डन दुष्ट हैं॥
 रक्त बीजासुर अधर्मी आयो है दल जोड़ के।
 शोर कर लडवे को धायो कियो है रण घनघोर के॥
 जय जय भवानी जगत स्वामिनी सर्व शक्ति बुलाय के।
 योगनिन को रक्त पियायो अंतरिक्ष पठाय के॥
 महामूढ़ निशुम्भ योधा हनो है खड्ग बजाय के।
 सुनत ही राजा शुम्भ धायो सकल सैन्य सजाय के॥
 परस्पर जब युद्ध माच्यो दिवस से रजनी भई।
 दास कारण असुर मारे पुष्प घन वरषा भई॥
 चित लाय चण्डी चरित्र पढ़े और सुनत जो निशदिन सदा।
 पुत्र मित्र कलत्र सुख सों, दुःख न आवे ढिंग कदा॥
 भक्ति मुक्ति सुबुद्धि बहु धन धान्य सुख सम्पत्ति बड़े।
 शत्रु नाश प्रकाश चण्डी आनन्द मंगल नित करे॥
 शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनाम्।
 वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्॥
 हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्।
 वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धि प्रदां शारदाम्॥



एकादश श्लोक

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥१॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्य दुःख भय हारिणि का त्वदन्या ।
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥२॥

सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥३॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥४॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवी नमोऽस्तु ते ॥५॥

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥६॥

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
 एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥७॥

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
 दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥८॥

विन्ध्येश्वरी जगन्मातः भक्तानुग्रहकारिणी ।
 बद्री भक्त नुते देवी झण्डेवाली नमोऽस्तु ते ॥९॥

सरस्वती महाविद्या वीणापुस्तकधारिणी ।
 हंसवाहिनी समारुढ विद्या बुद्धिं ददातु मे ॥१०॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
 त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
 त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥११॥



देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्॥१॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत्क्षान्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥२॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥३॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥४॥

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्॥५॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ॥६॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्॥७॥

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः॥८॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
 किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
 श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
 धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव॥९॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
 करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
 नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
 क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं
 परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
 अपराधपरम्परापरं

न हि माता समुपेक्षते सुतम्॥११॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
 एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु॥१२॥

धर्म की जय हो! अधर्म का नाश हो!
 प्राणियों में सद्भावना हो!
 विश्व का कल्याण हो!
 सत्य सनातन धर्म की जय हो!
 हिन्दु धर्म की जय हो!

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् (हिन्दी)

माँ! मैं न मंत्र जानता हूँ, न यंत्र; अहो! मुझे स्तुति का भी ज्ञान नहीं है। न आवाहन का पता है न ध्यान का। स्तोत्र और कथा की भी जानकारी नहीं है। न तो तुम्हारी मुद्राएँ जानता हूँ और न मुझे व्याकुल होकर विलाप करना ही आता है; परंतु एक बात जानता हूँ, केवल तुम्हारा अनुसरण—तुम्हारे पीछे चलना। जो कि सब क्लेशों को—समस्त दुःख-विपत्तियों को हर लेने वाला है॥१॥

सबका उद्धार करने वाली कल्याणमयी माता! मैं पूजा की विधि नहीं जानता, मेरे पास धन का भी अभाव है, मैं स्वभाव से भी आलसी हूँ तथा मुझसे ठीक-ठाक पूजा का सम्पादन हो भी नहीं सकता; इन सब कारणों से तुम्हारे चरणों की सेवा में जो त्रुटि हो गयी है, उसे क्षमा करना; क्योंकि कुपुत्र का होना सम्भव है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती॥२॥

माँ! इस पृथ्वी पर तुम्हारे सीधे-सादे पुत्र तो बहुत से हैं, किंतु उन सबमें मैं ही अत्यन्त चपल तुम्हारा बालक हूँ; मेरे-जैसा चंचल कोई विरला ही होगा। शिवे! मेरा जो यह त्याग हुआ है, यह तुम्हारे लिये कदापि उचित नहीं है; क्योंकि संसार में कुपुत्र का होना संभव है, किन्तु कहीं भी कुमाता नहीं होती॥३॥

जगदम्ब! मातः! मैंने तुम्हारे चरणों की सेवा कभी नहीं की, देवि! तुम्हें अधिक धन भी समर्पित नहीं किया; तथापि मुझ-जैसे अधम पर जो तुम अनुपम स्नेह करती हो इसका कारण यही है कि संसार में कुपुत्र पैदा हो सकता है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती॥४॥

गणेशजी को जन्म देनेवाली माता पार्वती! (अन्य देवताओं की आराधना करते समय) मुझे नाना प्रकार की सेवाओं में व्यग्र रहना पड़ता था, इसलिये पचासी वर्ष से अधिक अवस्था बीत जाने पर मैंने देवताओं को छोड़ दिया है, अब उनकी सेवा-पूजा मुझ से नहीं हो पाती; अतएव उनसे कुछ भी सहायता मिलने की आशा नहीं है। इस समय यदि तुम्हारी कृपा नहीं होगी तो मैं अवलम्ब रहित होकर किसकी शरण में जाऊँगा॥५॥

माता अपर्णा! तुम्हारे मंत्र का एक अक्षर भी कान में पड़ जाय तो उसका फल यह होता है कि मूर्ख चाण्डाल भी मधुपाक के समान मधुर वाणी का उच्चारण करने वाला उत्तम वक्ता हो जाता है, दीन मनुष्य भी करोड़ों स्वर्ण-मुद्राओं से सम्पन्न हो चिरकाल तक निर्भय विहार करता रहता है। जब मंत्र के एक अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है तो जो लोग विधिपूर्वक जपमें लगे रहते हैं उनके जपसे प्राप्त होनेवाला उत्तम फल कैसा होगा? इसको कौन मनुष्य जान सकता है॥६॥

भवानी! जो अपने अङ्गों में चिता की राख-भभूत लपेटे रहते हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगम्बरधारी (नग्न रहने वाले) हैं, मस्तकपर जटा और कण्ठ में नागराज वासुकि को हारके रूप में धारण करते हैं तथा जिनके हाथ में कपाल (भिक्षापात्र) शोभा पाता है, ऐसे भूतनाथ पशुपति भी जो एकमात्र 'जगदीश' की पदवी धारण करते हैं, इसका क्या कारण है? यह महत्त्व उन्हें कैसे मिला? यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहण की परिपाटी का फल है; तुम्हारे साथ विवाह होने से ही उनका महत्त्व बढ़ गया॥७॥

मुख में चन्द्रमा की शोभा धारण करने वाली माँ! मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की भी अभिलाषा नहीं है; न विज्ञान की अपेक्षा है, न सुख की आकांक्षा है; अतः तुमसे मेरी यही याचना है कि मेरा जन्म 'मृडानी, रुद्राणी, शिव-शिव, भवानी'—इन नामों का जप करते हुए बीते॥८॥

माँ श्यामा! नाना प्रकार की पूजन-सामग्रियों से कभी विधि पूर्वक तुम्हारी आराधना मुझसे न हो सकी। सदा कठोर भाव का चिन्तन करने वाली मेरी वाणी ने कौन-सा अपराध नहीं किया है! फिर भी तुम स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथ पर जो किंचित कृपादृष्टि रखती हो, माँ! यह तुम्हारे ही योग्य है! तुम्हारी-जैसी दयामयी माता ही मेरे-जैसे कुपुत्र को भी आश्रय दे सकती है॥९॥

माता दुर्गे! करुणासिन्धु महेश्वरी! मैं विपत्तियों में फँसकर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ (पहले कभी नहीं करता रहा) इसे मेरी शठता न मान लेना; क्योंकि भूख-प्यास से पीड़ित बालक माता का ही स्मरण करते हैं॥१०॥

जगदम्ब! मुझपर जो तुम्हारी पूर्ण कृपा बनी हुई है, इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है, पुत्र अपराध-पर-अपराध क्यों न करता जाता हो, फिर भी माता उसकी उपेक्षा नहीं करती॥११॥

महादेवि! मेरे समान कोई पातकी नहीं है और तुम्हारे समान दूसरी कोई पापहारिणी नहीं है; ऐसा जानकर जो उचित जान पड़े, वह करो॥१२॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् ।

सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥१॥

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥२॥

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥३॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
'पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्॥४॥

अथ मन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः
ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

॥ इति मन्त्रः ॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
 नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि।१।
 नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि।२।
 जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।
 ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।३।
 क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।
 चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।४।
 विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि।५।
 धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
 क्रां क्रीं कूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु।६।
 हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
 भ्रां भ्रीं भूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः।७।
 अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
 धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥
 पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।८।
 सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे॥
 इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे।
 अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति॥
 यस्तु कुञ्जिकया देवी हीनां सप्तशतीं पठेत्।
 न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा॥

इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुञ्जिकस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

इस स्तोत्र का प्रातः पाठ करने से सभी बाधा-विघ्न नष्ट हो जाते हैं।

अथार्गलास्तोत्रम्

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है

मार्कण्डेय जी कहते हैं—जयन्ती, मंगला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा और स्वधा—इन नामों से प्रसिद्ध जगदम्बिके! तुम्हें मेरा नमस्कार हो। देवि चामुण्डे! तुम्हारी जय हो। सम्पूर्ण प्राणियों की पीड़ा हरने वाली देवि! तुम्हारी जय हो। सबमें व्याप्त रहने वाली देवि! तुम्हारी जय हो। कालरात्रि! तुम्हें मेरा नमस्कार हो॥१-२॥ मधु और कैटभ को मारने वाली तथा ब्रह्मा जी को वरदान देने वाली देवि! तुम्हें नमस्कार है। तुम मुझे रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो, जय (मोह पर विजय) दो, यश (मोहविजय तथा ज्ञान-प्राप्ति रूप यश) दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥३॥ महिषासुर का नाश करने वाली तथा भक्तों को सुख देने वाली देवि! तुम्हें नमस्कार है। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥४॥

रक्तबीज का वध और चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली देवि! तुम रूप दो, जय दो, यश दो

और काम-क्रोध आदि शत्रुओंका नाश करो॥५॥ शुम्भ और निशुम्भ तथा धूम्रलोचन का मर्दन करने वाली देवि! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥६॥ सबके द्वारा वन्दित युगल चरणों वाली तथा सम्पूर्ण सौभाग्य प्रदान करने वाली देवि! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥७॥ देवि! तुम्हारे रूप और चरित्र अचिन्त्य हैं। तुम समस्त शत्रुओं का नाश करने वाली हो। रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥८॥ पापों को दूर करने वाली चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक तुम्हारे चरणों में सर्वदा मस्तक झुकाते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और उनके काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥९॥ रोगों का नाश करनेवाली चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और उनके काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥१०॥

चण्डिके! इस संसार में जो भक्तिपूर्वक तुम्हारी पूजा करते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और उनके काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥११॥ मुझे सौभाग्य और आरोग्य दो। परम सुख दो, रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध आदि शत्रुओं

का नाश करो॥१२॥ जो मुझसे द्वेष रखते हों, उनका नाश और मेरे बल की वृद्धि करो। रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥१३॥ देवि! मेरा कल्याण करो। मुझे उत्तम सम्पत्ति प्रदान करो। रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥१४॥

अम्बिके! देवता और असुर—दोनों ही अपने माथे के मुकुट की मणियों को तुम्हारे चरणों पर घिसते रहते हैं। तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥१५॥ तुम अपने भक्त जन को विद्वान, यशस्वी और लक्ष्मीवान् बनाओ तथा रूप दो, जय दो, यश दो और उसके काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥१६॥ प्रचण्ड दैत्यों के दर्प का दलन करने वाली चण्डिके! मुझ शरणागत को रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥१७॥ चतुर्मुख ब्रह्माजी के द्वारा प्रशंसित चार भुजाधारिणी परमेश्वरी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥१८॥

देवि अम्बिके! भगवान् विष्णु नित्य-निरन्तर भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करते रहते हैं। तुम रूप दो,

जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥१९॥ हिमालय-कन्या पार्वती के पति महादेवजी के द्वारा प्रशंसित होने वाली परमेश्वरी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥२०॥ शचीपति इन्द्र के द्वारा सद्भाव से पूजित होने वाली परमेश्वरी! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥२१॥ प्रचण्ड भुजदण्डों वाले दैत्यों का घमण्ड चूर करने वाली देवि! तुम रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥२२॥

देवि अम्बिके! तुम अपने भक्तजनों को सदा असीम आनन्द प्रदान करती रहती हो। मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो॥२३॥ मन की इच्छा के अनुसार चलने वाली मनोहर पत्नी प्रदान करो, जो दुर्गम संसार सागर से तारने वाली तथा उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो॥२४॥ जो मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करके सप्तशती रूपी महास्तोत्र का पाठ करता है, वह सप्तशती की जप संख्या से मिलने वाले श्रेष्ठ फल को प्राप्त होता है। साथ ही वह प्रचुर सम्पत्ति भी प्राप्त कर लेता है॥२५॥



श्रीभगवतीस्तोत्रम्

जय भगवति देवि नमो वर दे, जय पापविनाशिनि बहुफल दे।
जय शुम्भनिशुम्भकपालधरे, प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे॥१॥
जय चन्द्रदिवाकरनेत्रधरे, जय पावकभूषितवक्त्रवरे।
जय भैरवदेहनिलीनपरे, जय अन्धकदैत्यविशोषकरे॥२॥
जय महिषविमर्दिनि शूलकरे, जय लोकसमस्तकपापहरे।
जय देवि पितामहविष्णुनते, जय भास्करशक्रशिरोऽवनते॥३॥
जय षण्मुखसायुधईशनुते, जय सागरगामिनि शम्भुनुते।
जय दुःखदरिद्रविनाशकरे, जय पुत्रकलत्रविवृद्धिकरे॥४॥
जय देवि समस्तशरीरधरे, जय नाकविदर्शिनि दुःखहरे।
जय व्याधिविनाशिनि मोक्ष करे, जय वाञ्छितदायिनि सिद्धिवरे॥५॥
एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः।
गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा॥६॥

हे वरदायिनी देवि! हे भगवति! तुम्हारी जय हो।
हे पापों को नष्ट करने वाली और अनन्त फल देने वाली देवि! तुम्हारी जय हो! हे शुम्भ-निशुम्भ के मुण्डों को धारण करने वाली देवि! तुम्हारी जय हो। हे मनुष्यों की पीड़ा हरने वाली देवि! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ॥१॥ हे सूर्य-चन्द्रमारूपी नेत्रों को धारण करने वाली! तुम्हारी जय हो। हे अग्नि के समान देदीप्यमान मुख से शोभित होने वाली! तुम्हारी जय हो। हे भैरव-शरीर

में लीन रहने वाली और अन्धकासुर का शोषण करने वाली देवि! तुम्हारी जय हो, जय हो॥२॥

हे महिषासुर का मर्दन करने वाली! शूलधारिणी और लोक के समस्त पापों को दूर करने वाली भगवति! तुम्हारी जय हो। ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य और इन्द्र से नमस्कृत होने वाली हे देवि! तुम्हारी जय हो, जय हो॥३॥ सशस्त्र शंकर और कार्तिकेयजी के द्वारा वन्दित होने वाली देवि! तुम्हारी जय हो। शिव के द्वारा प्रशंसित एवं सागर में मिलने वाली गंगारूपिणी देवि! तुम्हारी जय हो। दुःख और दरिद्रता का नाश तथा पुत्र-कलत्र की वृद्धि करने वाली हे देवि! तुम्हारी जय हो, जय हो॥४॥

हे देवि! तुम्हारी जय हो। तुम समस्त शरीरों को धारण करने वाली, स्वर्गलोक का दर्शन कराने वाली और दुःखहारिणी हो। हे व्याधिनाशिनी देवि! तुम्हारी जय हो। मोक्ष तुम्हारे करतलगत है, हे मनोवांछित फल देने वाली अष्ट सिद्धियों से सम्पन्न परा देवि! तुम्हारी जय हो॥५॥ जो कहीं भी रहकर पवित्र भाव से नियमपूर्वक इस व्यासकृत स्तोत्र का पाठ करता है अथवा शुद्ध भाव से घर पर ही पाठ करता है, उसके ऊपर भगवती सदा ही प्रसन्न रहती हैं॥६॥

इति व्यासकृतं श्रीभगवतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

अथ देव्याः कवचम्

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है।

मार्कण्डेय जी ने कहा—पितामह! जो इस संसार में परमगोपनीय तथा मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाला है और जो अब तक आपने दूसरे किसी के सामने प्रकट नहीं किया हो, ऐसा कोई साधन मुझे बताइये। ब्रह्मा जी बोले—ब्रह्मन्! ऐसा साधन तो एक देवी का कवच ही है, जो गोपनीय से भी परम गोपनीय, पवित्र तथा संपूर्ण प्राणियों का उपकार करने वाला है। महामुने! उसे श्रवण करो ॥२॥

देवी की नौ मूर्तियाँ हैं, जिन्हे 'नवदुर्गा' कहते हैं। उनके पृथक्-पृथक् नाम बतलाये जाते हैं। प्रथम नाम शैलपुत्री है। दूसरी मूर्ति का नाम ब्रह्मचारिणी है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा के नाम से प्रसिद्ध है। चौथी मूर्ति को कूष्माण्डा कहते हैं। पाँचवीं दुर्गा का नाम स्कन्द माता है। देवी के छठे रूप को कात्यायनी कहते हैं। सातवाँ कालरात्रि और आठवाँ स्वरूप महागौरी के नाम से प्रसिद्ध है। नवीं दुर्गा का नाम सिद्धिदात्री है। ये सब नाम सर्वज्ञ महात्मा वेद भगवान् के द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं॥३-५॥

जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, रणभूमि में शत्रुओं से घिर गया हो, विषम संकट में फँस गया हो तथा इस प्रकार भय से आतुर होकर जो भगवती दुर्गा की शरण में प्राप्त हुए हों, उनका कभी कोई अमंगल नहीं होता।

युद्ध के समय संकट में पड़ने पर भी उनके ऊपर कोई विपत्ति नहीं दिखाई देती। उन्हें शोक, दुःख और भय की प्राप्ति नहीं होती॥६-७॥

जिन्होंने भक्तिपूर्वक देवी का स्मरण किया है, उनका निश्चय ही अभ्युदय होता है। देवेश्वरि! जो तुम्हारा चिन्तन करते हैं, उनकी तुम निःसन्देह रक्षा करती हो॥८॥ चामुण्डा देवी प्रेत पर आरूढ़ होती हैं। वाराही भैसे पर सवारी करती हैं। ऐन्द्री का वाहन ऐरावत हाथी है। वैष्णवी देवी गरुड़ पर ही आसन जमाती हैं॥९॥ माहेश्वरी वृषभ पर आरूढ़ होती हैं कौमारी का वाहन मयूर है। भगवान विष्णु की प्रियतमा लक्ष्मी देवी कमल के आसन पर विराजमान हैं और हाथों में कमल धारण किये हुए हैं॥१०॥ वृषभ पर आरूढ़ ईश्वरी देवी ने श्वेत रूप धारण कर रखा है। ब्राह्मी देवी हंस पर बैठी हुई हैं और सब प्रकार के आभूषणों से विभूषित हैं॥११॥ इस प्रकार से सभी माताएँ सब प्रकार की योगशक्तियों से सम्पन्न हैं। इनके सिवा और भी बहुत-सी देवियाँ हैं, जो अनेक प्रकार के आभूषणों की शोभा से युक्त तथा नाना प्रकार के रत्नों से सुशोभित हैं॥१२॥

ये सम्पूर्ण देवियाँ क्रोध में भरी हुई हैं और भक्तों की रक्षा के लिए रथ पर बैठी दिखाई देती हैं। ये शंख, चक्र, गदा, शक्ति, हल और मुसल, खेटक और तोमर, परशु तथा पाश, कुन्त और त्रिशूल एवं उत्तम शार्ङ्गधनुष आदि अस्त्र-शस्त्र अपने हाथों में धारण करती हैं। दैत्यों के शरीर का नाश करना, भक्तों को अभयदान देना और देवताओं का कल्याण करना—यही उनके शस्त्र धारण का

उद्देश्य है॥१३-१५॥ महान् रौद्र रूप, अत्यन्त घोर पराक्रम, महान् बल और महान् उत्साह वाली देवी! तुम महान् भय का नाश करने वाली हो, तुम्हें नमस्कार है॥१६॥ तुम्हारी ओर देखना भी कठिन है। शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली जगदम्बिके! मेरी रक्षा करो।

पूर्व दिशा में ऐन्द्री (इन्द्रशक्ति) मेरी रक्षा करें। अग्नि कोण में अग्निशक्ति, दक्षिण दिशा में वाराही तथा नेर्ऋत्यकोण में खड्गधारिणी मेरी रक्षा करें। पश्चिम दिशा में वारुणी और वायव्य कोण में मृग पर सवारी करने वाली देवी मेरी रक्षा करें॥१७-१८॥

उत्तर दिशा में कौमारी और ईशान कोण में शूलधारिणी देवी रक्षा करें। ब्रह्माणि! तुम ऊपर की ओर से मेरी रक्षा करो और वैष्णवी देवी नीचे की ओर से मेरी रक्षा करें॥१९॥ इसी प्रकार शव को अपना वाहन बनाने वाली चामुण्डा देवी दसों दिशाओं में मेरी रक्षा करें। जया आगे से और विजया पीछे की ओर से मेरी रक्षा करें॥२०॥ वाम भाग में अजिता और दक्षिण भाग में अपराजिता रक्षा करें। उद्योतिनी शिखा की रक्षा करें। उमा मेरे मस्तक पर विराजमान होकर रक्षा करें॥२१॥ ललाट में मालाधारी रक्षा करें और यशस्विनी देवी मेरी भौंहों का संरक्षण करें। भौंहों के मध्य भाग में त्रिनेत्रा और नथुनों की यमघण्टादेवी रक्षा करें॥२२॥ दोनों नेत्रों के मध्यभाग में शङ्खिनी और कानों में द्वारवासिनी रक्षा करें। कालिका देवी कपोलों की तथा भगवती शांकरी कानों के मूल भाग की रक्षा करें॥२३॥ नासिका में सुगन्धा और ऊपर के

ओठ में चर्चिका देवी रक्षा करें। नीचे के ओठ में अमृत कला तथा जिह्वा में सरस्वती देवी रक्षा करें॥२४॥

कौमारी दाँतों की और चण्डिका कण्ठ प्रदेश की रक्षा करें। चित्रघण्टा गले की घांटी की और महामाया तालू में रहकर रक्षा करें॥२५॥ कामाक्षी ठोढ़ी की और सर्वमङ्गला मेरी वाणी की रक्षा करें। भद्रकाली ग्रीवा में और धनुर्धरी पृष्ठवंश (मेरुदण्ड) में रहकर रक्षा करें॥२६॥ कण्ठ के बाहरी भाग में नीलग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकूबरी रक्षा करें। दोनों कंधों में खड्गिनी और मेरी दोनों भुजाओं की वज्रधारिणी रक्षा करें॥२७॥ दोनों हाथों में दण्डिनी और अंगुलियों में अम्बिका रक्षा करें। शूलेश्वरी नखों की रक्षा करें। कुलेश्वरी कुक्षि (पेट) में रह कर रक्षा करें॥२८॥

महोदेवी दोनों स्तनों की और शोक विनाशिनी देवी मन की रक्षा करें। ललिता देवी हृदय में और शूलधारिणी उदर में रहकर रक्षा करें॥२९॥ नाभि में कामिनी और गुह्य भाग की गुह्येश्वरी रक्षा करें। पूतना और कामिका लिङ्गकी और महिषवाहिनी गुदा की रक्षा करें॥३०॥ भगवती कटिभाग में और विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करें। सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाली महाबला देवी दोनों पिण्डलियों की रक्षा करें॥३१॥ नारसिंही दोनों घुट्टियों की और तैजसी देवी दोनों चरणों के पृष्ठ भाग की रक्षा करें। श्री देवी पैरों की अंगुलियों में और तलवासिनी पैरों के तलुओं में रह कर रक्षा करें॥३२॥ अपनी दाढ़ों के कारण भयंकर दिखाई देने वाली दंष्ट्राकराली देवी नखों की और ऊर्ध्वकेशिनी देवी केशों की रक्षा करें। रोमावलियों के छिद्रों

में कौबेरी और त्वचा की वागीश्वरी देवी रक्षा करें॥३३॥
 पार्वती देवी रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी और मेद की
 रक्षा करें। आँतों की कालरात्रि और पित्त की मुकुटेश्वरी
 रक्षा करें॥३४॥ मूलाधार आदि कमल-कोशों में पद्मावती
 देवी और कफ में चूडामणि देवी स्थित होकर रक्षा करें।
 नख के तेज की ज्वालामुखी रक्षा करें। जिसका किसी भी
 अस्त्र से भेदन नहीं हो सकता, वह अभेद्या देवी शरीर
 की समस्त सन्धियों में रहकर रक्षा करें॥३५॥

ब्रह्माणि! आप मेरे वीर्य की रक्षा करें। छत्रेश्वरी छाया
 की तथा धर्मधारिणी देवी मेरे अहंकार, मन और बुद्धि
 की रक्षा करें॥३६॥ हाथ में वज्र धारण करने वाली
 वज्रहस्ता देवी मेरे प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान
 वायु की रक्षा करें। कल्याण से शोभित होने वाली भगवती
 कल्याण शोभना मेरे प्राण की रक्षा करें॥३७॥ रस, रूप,
 गन्ध, शब्द और स्पर्श—इन विषयों का अनुभव करते समय
 योगिनी देवी रक्षा करें तथा सत्त्वगुण, रजोगुण और
 तमोगुण की रक्षा सदा नारायणी देवी करें॥३८॥ वाराही
 आयु की रक्षा करें। वैष्णवी धर्म की रक्षा करें तथा चक्रिणी
 (चक्र धारण करने वाली) देवी यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन
 तथा विद्या की रक्षा करें॥३९॥ इन्द्राणि! आप मेरे गोत्र
 की रक्षा करें। चण्डिके! तुम मेरे पशुओं की रक्षा करो।
 महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करें और भैरवी पत्नी की रक्षा
 करें॥४०॥ मेरे पथ की सुपथा और मार्ग की क्षेमकरी
 रक्षा करें। राजा के दरबार में महालक्ष्मी रक्षा करें तथा
 सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया देवी सम्पूर्ण भयों
 से मेरी रक्षा करें॥४१॥

देवी! जो स्थान कवच में नहीं कहा गया है, अतएव रक्षा से रहित है, वह सब तुम्हारे द्वारा सुरक्षित हों; क्योंकि तुम विजय शालिनी और पाप नाशिनी हो॥४२॥ यदि अपने शरीर का भला चाहे तो मनुष्य बिना कवच के कहीं एक पग भी न जाय—कवच का पाठ करके ही यात्रा करे। कवच के द्वारा सब ओर से सुरक्षित मनुष्य जहाँ-जहाँ भी जाता है, वहाँ-वहाँ उसे धन लाभ होता है तथा सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि करने वाली विजय की प्राप्ति होती है। वह जिस-जिस अभीष्ट वस्तु का चिन्तन करता है, उस-उस को निश्चय ही प्राप्त कर लेता है। वह पुरुष इस पृथ्वी पर तुलनारहित महान् ऐश्वर्य का भागी होता है॥४३-४४॥

कवच से सुरक्षित मनुष्य निर्भय हो जाता है। युद्ध में उसकी पराजय नहीं होती तथा वह तीनों लोकों में पूजनीय होता है॥४५॥ देवी का यह कवच देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। जो प्रतिदिन नियमपूर्वक तीनों संध्याओं के समय श्रद्धा के साथ इसका पाठ करता है, उसे दैवी कला प्राप्त होती है तथा वह तीनों लोकों में कहीं भी पराजित नहीं होता। इतना ही नहीं, वह अपमृत्यु (अकाल मृत्यु) से रहित हो सौ से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहता है॥४६-४७॥ मकरी, चेचक और कोढ़ आदि उसकी सम्पूर्ण व्याधियां नष्ट हो जाती हैं। कनेर, भाँग, अफीम, धतूरे आदि का स्थावर विष, साँप और बिच्छू आदि के काटने से चढ़ा हुआ जङ्गम विष तथा अहिफेन और तेल के संयोग आदि से बनने वाला कृत्रिम विष—ये सभी प्रकार के विष दूर हो जाते हैं, उनका कोई असर नहीं होता॥४८॥

इस पृथ्वी पर मारणमोहन आदि जितने आभिचारिक प्रयोग होते हैं तथा इस प्रकार के जितने मंत्र, यंत्र होते हैं, वे सब इस कवच को हृदय में धारण कर लेने पर उस मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं। ये ही नहीं, पृथ्वी पर विचरने वाले ग्राम देवता, आकाशचारी देव विशेष, जल के संबंध से प्रकट होने वाले गण, उपदेश मात्र से सिद्ध होने वाले निम्न कोटि के देवता, अपने जन्म के साथ प्रकट होने वाले देवता, कुलदेवता, माला (कण्ठमाला आदि), डाकिनी, शाकिनी, अंतरिक्ष में विचरने वाली अत्यन्त बलवती भयानक डाकिनियाँ, ग्रह, भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्माण्ड और भैरव आदि अनिष्टकारक देवता भी हृदय में कवच धारण किये रहने पर उस मनुष्य को देखते ही भाग जाते हैं। कवचधारी पुरुष को राजा से सम्मान वृद्धि प्राप्त होती है। यह कवच मनुष्य के तेज की वृद्धि करने वाला और उत्तम है॥४९-५२॥

कवच का पाठ करने वाला पुरुष अपनी कीर्ति से विभूषित भूतल पर अपने सुयश के साथ-साथ वृद्धि को प्राप्त होता है। जो पहले कवच का पाठ करके उसके बाद सप्तशती चण्डी का पाठ करता है, उसकी जब तक वन, पर्वत और काननों सहित यह पृथ्वी टिकी रहती है, तब तक यहाँ पुत्र-पौत्र आदि संतान परम्परा बनी रहती है॥५३-५४॥ फिर देह का अन्त होने पर वह पुरुष भगवती महामाया के प्रसाद से उस नित्य परमपद को प्राप्त होता है, जो देवताओं के लिये भी दुर्लभ है॥५५॥ वह सुन्दर दिव्य रूप धारण करता है और कल्याणमय शिव के साथ आनन्द का भागी होता है॥५६॥

अथ कीलकम्

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है।

मार्कण्डेय जी कहते हैं—विशुद्ध ज्ञान ही जिनका शरीर है, तीनों वेद ही जिनके तीन दिव्य नेत्र हैं, जो कल्याण-प्राप्ति के हेतु हैं तथा अपने मस्तक पर अर्धचन्द्र का मुकुट धारण करते हैं, उन भगवान् शिव को नमस्कार है॥१॥ मंत्रों का जो अभिकीलक है अर्थात् मंत्रों की सिद्धि में विघ्न उपस्थित करने वाले शाप-रूपी कीलक का जो निवारण करने वाला है, उस सप्तशतीस्तोत्र को सम्पूर्ण रूप से जानना चाहिये (और जानकर उसकी उपासना करनी चाहिये), यद्यपि सप्तशती के अतिरिक्त अन्य मंत्रों के जप में भी जो निरन्तर लगा रहता है, वह भी कल्याण का भागी होता है॥२॥ उसके भी उच्चाटन आदि कर्मसिद्ध होते हैं तथा उसे भी समस्त दुर्लभ वस्तुओं की प्राप्ति हो जाती है; तथापि जो अन्य मंत्रों का जप न करके केवल इस सप्तशती नामक स्तोत्र से ही देवी की स्तुति करते हैं, उन्हें स्तुति मात्र से ही सच्चिदानन्दस्वरूपिणी देवी सिद्ध हो जाती है॥३॥

उन्हें अपने कार्य की सिद्धि के लिए मंत्र, औषधि तथा अन्य किसी साधन के उपयोग की आवश्यकता नहीं रहती। बिना जप के ही उनके उच्चाटन आदि समस्त आभिचारिक कर्म सिद्ध हो जाते हैं॥४॥ इतना ही नहीं, उनकी सम्पूर्ण अभीष्ट वस्तुएँ भी सिद्ध होती हैं। लोगों के मन में यह शंका थी कि 'जब केवल सप्तशती की उपासना से अथवा सप्तशती को छोड़कर अन्य मंत्रों की उपासना से भी समान रूप से सब कार्य सिद्ध होते हैं, तब इनमें श्रेष्ठ कौनसा साधन है?' लोगों की इस शंका को सामने रखकर भगवान् शंकर ने अपने पास आये हुए जिज्ञासुओं को समझाया कि यह सप्तशती नामक सम्पूर्ण स्तोत्र ही सर्वश्रेष्ठ एवं कल्याणमय है॥५॥

तदनन्तर भगवती चण्डिका के सप्तशती नामक स्तोत्र को महादेव जी ने गुप्त कर दिया। सप्तशती के पाठ से जो पुण्य प्राप्त होता है, उसकी कभी समाप्ति नहीं होती; किन्तु अन्य मंत्रों के जपजन्य पुण्य की समाप्ति हो जाती है। अतः भगवान् शिव ने अन्य मंत्रों की अपेक्षा जो सप्तशती की ही श्रेष्ठता का निर्णय किया, उसे यथार्थ ही जानना चाहिये॥६॥ अन्य मंत्रों

का जप करने वाला पुरुष भी यदि सप्तशती के स्तोत्र और जप का अनुष्ठान कर ले तो वह भी पूर्ण रूप से ही कल्याण का भागी होता है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। जो साधक कृष्णपक्ष की चतुर्दशी अथवा अष्टमी को एकाग्रचित्त होकर भगवती की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है और फिर उसे प्रसाद रूप से ग्रहण करता है, उसी पर भगवती प्रसन्न होती है अन्यथा उनकी प्रसन्नता नहीं प्राप्त होती। इस प्रकार सिद्धि के प्रतिबन्धक रूप कील के द्वारा महादेव जी ने इस स्तोत्र को कीलित कर रखा है॥७-८॥ जो पूर्वोक्त रीति से निष्कीलन करके इस सप्तशती स्तोत्र का प्रतिदिन स्पष्ट उच्चारण पूर्वक पाठ करता है, वह मनुष्य सिद्ध हो जाता है, वही देवी का पार्षद होता है और वही गन्धर्व भी होता है॥९॥

सर्वत्र विचरते रहने पर भी इस संसार में उसे कहीं भी भय नहीं होता। वह अपमृत्यु के वश में नहीं पड़ता तथा देह त्यागने के अनन्तर मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥१०॥ अतः कीलन को जानकर उसका परिहार करके ही सप्तशती का पाठ आरंभ करें। जो ऐसा नहीं करता, उसका नाश हो जाता है। यहाँ कीलक और

निष्कलीन के ज्ञान की अनिवार्यता बताने के लिए ही विनाश होना कहा है। वास्तव में किसी प्रकार भी देवी का पाठ करें, उससे लाभ ही होता है। इसलिए कीलक और निष्कलीन का ज्ञान प्राप्त करने पर ही यह स्तोत्र निर्दोष होता है और विद्वान पुरुष इस निर्दोष स्तोत्र का ही पाठ आरंभ करते हैं॥११॥ स्त्रियों में जो कुछ भी सौभाग्य आदि दृष्टिगोचर होता है, वह सब देवी के प्रसाद का ही फल है। अतः इस कल्याणमय स्तोत्र का सदा जप करना चाहिये॥१२॥ इस स्तोत्र का मन्दस्वर से पाठ करने पर स्वल्प फल की प्राप्ति होती है और उच्च स्वर से पाठ करने पर पूर्ण फल की प्राप्ति होती है। अतः उच्च स्वर से ही इसका पाठ आरंभ करना चाहिए॥१३॥ जिनके प्रसाद से ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, सम्पत्ति, शत्रुनाश तथा परम मोक्ष की भी सिद्धि होती है, उस कल्याणमयी जगदम्बा की स्तुति मनुष्य क्यों नहीं करते?॥१४॥



आनन्दलहरी

हे भवानि! प्रजापति ब्रह्माजी अपने चार मुखों से भी तुम्हारी स्तुति करने में समर्थ नहीं हैं, त्रिपुरविनाशक महादेवजी पाँच मुखों से भी तुम्हारा स्तवन नहीं कर सकते, कार्तिकेयजी तो छः मुखों के रहते हुए भी असमर्थ हैं, इने-गिने मुखवालों की तो बात ही क्या है, नागराज शेष हजार मुखों से भी तुम्हारा गुणगान नहीं कर पाते, फिर तुम्हीं बताओं, जब इनकी यह दशा है तो दूसरे किसी को और किस प्रकार तुम्हारी स्तुति का अवसर प्राप्त हो सकता है?॥१॥ घी, दूध, दाख और मधु की मधुरता को किसी भी शब्द से विशेषरूप से नहीं बताया जा सकता, उसे तो केवल रसना (जिह्वा) ही जानती है। इसी प्रकार तुम्हारा सौन्दर्य केवल महादेवजी के नेत्रों का ही विषय है, उसे हम क्यों कर बतावें? हे देवि! तुम्हारे गुणों का वर्णन तो सारे वेद भी नहीं कर सकते॥२॥ तुम्हारे मुख में पान है, नेत्रों में काजल की पतली रेखा है, ललाट में केसर की बिंदी है, गले में मोती का हार सुशोभित हो रहा है, कटिके निम्नभाग में सुनहरी साड़ी है, जिसपर रत्नमयी मेखला (करधनी) चमक रही है, ऐसी वेष-भूषा से सजी हुई गिरिराज हिमालय की गौरवर्णा कन्या तुमको मैं सदा ही भजता हूँ॥३॥

जहाँ पारिजात-पुष्प की माला सुशोभित हो रही है, उन उरोजों के समीप बजती हुई वीणा का मधुर नाद श्रवण करते हुए जिनके कानों में कुण्डल शोभा पा रहे हैं, जिनका अङ्ग झुका हुआ है, हथिनी की भाँति जिनकी मन्द-मनोहर चाल है, जिनके नेत्र कमल के समान सुन्दर और चंचल हैं, वे शम्भु की सती भार्या भगवती उमा सर्वत्र विजयिनी हो रही हैं॥४॥ जिनका अङ्ग नवोदित बाल रवि के समान देदीप्यमान मणि और सोने के आभूषणों से अलंकृत है, मृगी के समान जिनके विशाल एवं सुन्दर नेत्र हैं, जिन्होंने शिव को पतिरूप से स्वीकार किया है, बिजली के समान जिनकी पीत प्रभा है, जो पीत वस्त्र की प्रभा पड़ने से और अधिक सुन्दर प्रतीत होने वाले मंजीर को चरणों में धारण करके सुशोभित हो रही हैं, वे निरतिशय आनन्द से पूर्ण भगवती अपर्णा मुझपर सुप्रसन्न हो॥५॥ समस्त रोगों को नष्ट करनेवाली एक चलती-फिरती चिदानन्दमयी लता (उमा) सुशोभित हो रही है, वह हिमालय से उत्पन्न हुई है, सुन्दर हाथ ही उसके पल्लव हैं, मुक्ता का हार ही सुन्दर फूल है, काली-काली अलकें भ्रमरों की भाँति उसे आच्छन्न किये हुई हैं, स्थाणु (शंकरजी अथवा टूँठ वृक्ष) ही उसके रहने का आश्रय है, उरोजरूपी फलों के भार

से वह झुकी हुई है और सुन्दर वाणीरूपी रस से भरी है॥६॥ दूसरे लोग कुछ ही गुणों से युक्त सपर्णा (पत्तेवाली) लता का आदर पूर्वक सेवन करते हैं, परन्तु हमारी बुद्धि तो इस प्रकार स्फुरित होती है कि इस जगत् में सभी लोगों को एक मात्र अपर्णा (पार्वती या बिना पत्ते की लता) का ही सेवन करना चाहिये, जिससे आवृत होकर पुराना स्थाणु भी कैवल्यपदवी (मोक्ष) रूप फल देता है॥७॥

सम्पूर्ण धर्मोंकी सृष्टि करने वाली और समस्त आगमों को जन्म देने वाली तुम्हीं हो। हे देवि! कुवेर भी तुम्हारे चरणों की वन्दना करते हैं, तुम्हीं समस्त वैभव का मूल हो। हे कामदेव पर विजय पाने वाली माँ! कामनाओं की आदि कारण भी तुम्हीं हो! तुम पर ब्रह्मरूप महेश्वर की पटरानी हो। अतः तुम्हीं संतों के मोक्ष का बीज हो॥८॥ मेरा मन चंचल है, इसलिये यद्यपि मैंने आपकी प्रचुर भक्ति नहीं की है तथापि आप को इस समय मुझपर अवश्य ही दया-दृष्टि करनी चाहिए। चातक चाहे प्रेम करे या न करे, पर मेघ तो उसके मुख में मधुर जल गिराता ही है अथवा मुझे बड़ी शंका हो रही है कि मेरी बुद्धि किन-किन विधियों से आपमें अनुनीत हो, आपकी ओर लगे॥९॥

हे साधु चरित्रों वाली माँ! तुम बहुत शीघ्र अपनी कृपाकटाक्षयुक्त दृष्टि से मुझे निहारो। मैं तुम्हारी शरण की दीक्षा ले चुका हूँ, अब मेरी उपेक्षा करना उचित नहीं है। यदि कल्पलता पग-पग पर अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति न कर सके तो अन्य साधारण लताओं से उसमें विशेषता ही कैसे रह सकती है?॥१०॥ हे लम्बोदर गणेश को जन्म देने वाली उमे! मैंने तुम्हारे युगल चरणारविन्दों में बहुत बड़ा विश्वास रखकर किसी अन्य देवता का आश्रय नहीं लिया, तथापि यदि तुम्हारा चित्त मुझपर सदय न हो तो अब मैं किसकी शरण जाऊँगा॥११॥

जिस प्रकार लोहा पारस से छू जाने पर तत्काल सोना बन जाता है और गलियों (के नाले) का जल गंगाजी में पड़कर पवित्र हो जाता है उसी प्रकार भिन्न-भिन्न पापों से मलिन हुआ मेरा अन्तःकरण यदि प्रेमपूर्वक तुम में आसक्त हो गया तो वह कैसे निर्मल नहीं होगा?॥१२॥ हे ईशानि! तुमसे अन्य किसी देवता से मनोवांछित फल प्राप्त हो ही जाय, ऐसा नियम नहीं है, परन्तु तुम तो पुरुषों को उनकी इच्छा से अधिक वस्तु भी देने में समर्थ हो—इस प्रकार ब्रह्मादि प्राचीन

पुरुष कहा करते हैं। इसलिए अब मेरा मन रात-दिन तुममें ही लगा रहता है, अब तुम जो उचित समझो करो॥१३॥ हे त्रिभुवनमहाराज शिव की गृहिणी शिवे! जहाँ नानाप्रकार के रत्न और स्फटिकमणि की भीतपर तुम्हारा आकार प्रतिबिम्बित हो रहा है, जिसकी अट्टालिका के शिखर पर प्रतिबिम्बित होकर चन्द्रमा की कला सुशोभित हो रही है, विष्णु, ब्रह्मा और इन्द्र आदि देवता जिसे घेरकर खड़े रहते हैं, वह तुम्हारा रमणीय भवन विजयी हो रहा है॥१४॥ हे गिरिराजनन्दिनि! तुम्हारा कैलास में निवास है, ब्रह्मा और इन्द्र आदि तुम्हारी स्तुति किया करते हैं। समस्त त्रिभुवन ही तुम्हारा कुटुम्ब है, आठों सिद्धियों का समुदाय तुम्हारे सामने हाथ जोड़कर खड़ा रहता है और महेश्वर तुम्हारे प्राणनाथ हैं; तुम्हारे सौभाग्य की कहीं अल्प भी तुलना नहीं हो सकती॥१५॥ हे जननि! कामारि शिव का बूढ़ा बैल ही वाहन है, विष ही भोजन है, दिशाएँ ही वस्त्र है; श्मशान ही रंगभूमि है और साँप ही आभूषण का काम देते हैं; उनकी यह सारी सामग्री संसार में प्रसिद्ध ही है, फिर भी जो उनके पास ऐश्वर्य है, वह तुम्हारे ही सौभाग्य की महिमा है॥१६॥

हे कल्याणि! जिनकी बुद्धि स्वभावतः समस्त ब्रह्माण्ड का संहार करने में ही प्रवृत्त होती है, जो अंगों में राख पोतकर श्मशान में बैठे रहते हैं, (ऐसे निठुर स्वभाव वाले) पशुपति ने जो समस्त भूमण्डल पर दया करके कण्ठ में हालाहल विष धारण कर लिया, उसे मैं आपके सत्संग का ही फल समझता हूँ॥१७॥ हे शैलनन्दिनि! आपके सर्वोत्कृष्ट सौन्दर्य को देखकर अत्यन्त भय के कारण ही गंगाजी ने जलमय शरीर धारण कर लिया, इससे गंगाजी के दीन मुख कमल को देखकर दयावश शंकरजी उन्हें अपने सिर पर निवास देकर उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं॥१८॥ हे भगवति! जिसमें विशाल चन्दन के रस, कस्तूरी और केसर के फूल मिले हुए हैं ऐसे तुम्हारे अनुलेपन के जल को और चलते हुए तुम्हारे चरणों की धूलि को ही लेकर ब्रह्माजी सुरपुर की कमलनयनी वनिताओं (अप्सराओं) की सृष्टि करते हैं॥१९॥ हे देवि! वसन्त ऋतु में खिली हुई लताओं से मण्डित, नाना कमलों से सुशोभित एवं हंसों की मण्डली से अलंकृत सरोवर के भीतर, जहाँ का जल मलयानिल से आन्दोलित हो रहा है, (उसमें) सखियों के साथ क्रीड़ा करती हुई आपका जो पुरुष ध्यान करता है, उसकी ज्वर-रोगजनित पीड़ा दूर हो जाती है॥२०॥

अथ दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी, नमो नमो अम्बे दुःख हरनी।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी, तिहूँ लोक फैली उजियारी।
शशि ललाट मुख महा विशाला, नेत्र लाल भृकुटी विकराला।
रूप मातु को अधिक सुहावे, दरश करत मन अति सुखपावे।
तुम संसार शक्ति लय कीना, पालन हेतु अन्न धन दीना।
अन्नपूर्णा हुई जग पाला, तुम्हीं आदि सुन्दरी बाला।
प्रलय काल सब नाशन हारी, तुम गौरी शिव शंकर प्यारी।
शिव योगी तुम्हारे गुण गावें, ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें।
रूप सरस्वती को तुम धारा, दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा।
धरा रूप नरसिंह को अम्बा, प्रगट भई फाड़ कर खम्बा।
रक्षा करि प्रहलाद बचायो, हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो।
लक्ष्मी रूप धरो जग माही, श्री नारायण अंग समाही।
क्षीरसिन्धु में करत विलासा, दया सिन्धु दीजे मन आसा।
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी, महिमा अमित न जान बखानी।
मातङ्गी अरु धूमावती माता, भुवनेश्वरी बगला सुखदाता।
श्री भैरव तारा जग तारिणि, छिन्न भाल भव दुःख निवारिणि।
केहरी वाहन सोहे भवानी, लांगुर बीर चलत अगवानी।
कर में खप्पर खड्ग बिराजे, जाको देख काल डर भाजे।
सोहै अस्त्र और त्रिशूला, जाते उठत शत्रु हिय शूला।

नगरकोट में तुम्हीं विराजत, तिहूँ लोक में डंका बाजत।
 शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे, रक्त बीज शंखन संहारे।
 महिषासुर नृप अति अभिमानी, जेहि अछ भार महि अकुलानी।
 रूप कराल कालि को धारा, सेन सहित तुम तिहि संहारा।
 परी भीर संतन पर जब जब, भई सहाय मातु तुम तब तब।
 अमर पुरी अरु बासव लोका, तब महिमा सब रहे अशोका।
 ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी, तुम्हें सदा पूजें नर नारी।
 प्रेम भक्ति से जो यश गावें, दुःख दारिद्र निकट नहि आवे।
 ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई, जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई।
 जोगी सुर मुनि कहत पुकारी, योग न होय बिन शक्ति तुम्हारी।
 शंकराचार्य जब तप कीन्हों, काम क्रोध जीति सब लीनो।
 निशदिन ध्यान धरो शंकर को, काहु काल नहि सुमिरो तुमको।
 शक्ति रूप का मरम न पायो, शक्ति गई तब मन फछतायो।
 शरणागत हो कीर्ति बखानी, जय जय जय जगदम्बे भवानी।
 भई प्रसन्न आदि जगदम्बा, दी शक्ति नहीं कीन विलम्बा।
 मोको मातु कष्ट अति घेरो, तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो।
 आशा तृष्णा निपट सतावैं, रिपु मूरख मोहि अति डरपावैं।
 शत्रु नाश कीजे महारानी, सुमिरो इकचित्त तुम्हें भवानी।
 करो कृपा हे मातु दयाला, ऋद्धि सिद्धि दे करहु निहाला।
 जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ, तुम्हरो यश में सदा ही गाऊँ।
 दुर्गा चालीसा जो कोई गावै, सब सुख भोग परम पद पावै।
 देवी दास शरण निज जानी, करहुँ कृपा जगदम्बे भवानी।

अथ विन्ध्येश्वरी चालीसा

नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्बा।

संत जनों के काज में करती नहीं विलम्बा॥

जय जय जय विन्ध्याचल रानी, आदि शक्ति जग विदित भवानी।
सिंहवाहिनी जय जय जगमाता, जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता।
कष्ट निवारिणी जय जग देवी, जय जय संत असुर सुरसेवी।
महिमा अमित अपार तुम्हारी, शेष सहस मुख वर्णत हारी।
दीनन के दुःख हरत भवानी, नहिं देख्यो तुम सम कोउ दानी।
सब कर मनसा पुरवत माता, महिमा अमित जगत विख्याता।
जो जन ध्यान तुम्हारो लावे, सो तुरतहिं वांछित फल पावे।
तू ही वैष्णवी तू ही रुद्राणी, तू ही शारदा अरु ब्रह्माणी।
रमा राधिका श्यामा काली, तू ही मातु सन्तन प्रतिपाली।
उमा माधवी चण्डी ज्वाला, बेगि मोहि पर होहु दयाला।
तू ही हिंगलाज महारानी, तू ही शीतला अरु विज्ञानी।
तू ही लक्ष्मी जग सुखदाता, दुर्गा दुर्ग विनाशिनी माता।
तू ही जाह्नवी अरु उत्रानी, हेमावती अम्बे निर्वाणी।
अष्टभुजी वाराहिनी देवी, करत विष्णु शिव जाकर सेवी।
चौसट्टी देवी कल्याणी, गौरी मंगला सब गुण खानी।
पाटन मुम्बा दन्त कुमारी, भद्रकाली सुन विनय हमारी।
बज्र धारिणी शोक नाशिनी, आयु रक्षिणी विन्ध्यवासिनी।

जया और विजया वैताली, मात संकटा अरु विक्राली।
 नाम अनन्त तुम्हार भवानी, बरनै किमि मानुष अज्ञानी।
 जापर कृपा मात तव होई, तो वह करै चहै मन जोई।
 कृपा करहुँ मोपर महारानी, सिद्ध करिय अब यह मम बानी।
 जो नर धरै मातु कर ध्याना, ताकर सदा होय कल्याना।
 विपत्ति ताहि सपनेहु नहि आवे, जो देवी का जाप करावै।
 जो नर कहँ ऋण होय अपारा, सो नर पाठ करे शत बारा।
 निश्चय नर ऋण मोचन होई जाई, जो नर पाठ करे मन लाई।
 अस्तुति जो नर पढ़े पढ़ावे, या जग में सो बहु सुख पावे।
 जाको व्याधि सतावे भाई, जाप करत सब दूर पराई।
 जो नर अति बन्दी महँ होई, बार हजार पाठ कर सोई।
 निश्चय बन्दी ते छुटि जाई, सत्य बचन मम मानहुँ भाई।
 जापर जो कछु संकट होई, निश्चय देविहिं सुमिरे सोई।
 जाके पुत्र होय नहि भाई, सो नर या विधि करे उपाई।
 पाँच वर्ष सो पाठ करावे, नौरातन में विप्र जिमावे।
 निश्चय होहि प्रसन्न भवानी, पुत्र देहिं ताको गुण खानी।
 ध्वजा नारियल आन चढ़ावे, विधि समेत पूजन करवावै।
 नित्य प्रति पाठ करे मन लाई, प्रेम सहित नहि आन उपाई।
 यह श्री विन्ध्याचल चालीसा, रंक पढ़त होवे अवनीसा।
 यह जानि अचरज मानहुँ भाई, कृपा दृष्टि जापर हुई जाई।
 जय जय जय जग मातु भवानी, कृपा दृष्टि मोहि पर जन जानी।

महारानी जी की आरती

रात गई दिन चढ़ गया मेरी अम्बे, हो रही है जय जय कार
मंदिर बिच आरती जै माँ, गुफा दे विच आरती जै माँ।
गुड़ दी रोडी मौली दा कंगना, आदि गणेश मनाया।....मंदिर
किस सुहागन तेरी जोत जगाई, कौन जागे सारी रात।....मंदिर
ध्यानू दी बहन तेरी जोत जगाई, ध्यानू जागे सारी रात।....मंदिर
काहे की मैया तेरी जोत जगाई, काहे की पाई विच बत्ती।....मंदिर
सर्व सोने दी भगता तेरी जोत जगाई, हीरियाँ दी पाई विच बत्ती।....मंदिर
किन किन मैया तेरा भवन बनाया, किन किन चँवर झुलाया।....मंदिर
पजाँ पजाँ पाण्डवा तेरा भवन बनाया, अर्जुन चँवर झुलाया।....मंदिर
नंगी नंगी पैरी देवी अकबर आया, सोने दा छत्तर चढ़ाया।....मंदिर
खोले खजाने बैठी वर दाती ऐ, खैर खजाने ओ पाया।....मंदिर
दर मैया तेरे तेली वसदाँ, जगमग जोत जगाई।....मंदिर
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शंकर ध्यान लगाया।....मंदिर
ऊंचे ऊंचे पर्वत बने शिवालय, नीचे शहर बसाया।....मंदिर
जुग जुग जीवे तेरा जम्मु दा राजा, जिस तेरा भवन बनाया।....मंदिर
रल मिल संगताँ तेरी जोत जगाई, रख चरणों दे कोल।....मंदिर
सिमर चरण तेरा भक्त यश गावे, रखदी बच्चे दी लाज।....मंदिर
रात गई दिन चढ़ गया मेरी अम्बे, हो रही है जय जय कार।....मंदिर

श्री अम्बाजी की आरती

ओउम् जय अम्बे गौरी मैया जय अम्बे गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि, ब्रह्मा, शिवजी॥ जय अम्बे
माँग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्र बदन नीको॥ जय अम्बे
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गलमाला, कण्ठन पर साजै॥ जय अम्बे
केहरि वाहन राजत, खड़ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनिजन सेवत, तिनके दुःख हारी॥ जय अम्बे
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्रदिवाकर, राजत सम ज्योति॥ जय अम्बे
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नयना, निशिदिन मदमाती॥ जय अम्बे
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरों।
बाजत ताल मृदंगा अरु बाजत डमरु॥ जय अम्बे
भुजा चार अति शोभित, खड़ग खप्पर धारी।
मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी॥ जय अम्बे
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति॥ जय अम्बे
अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे॥ जय अम्बे

श्री देवीजी की आरती

जगजननी जय! जय!! (माँ! जगजननी जय! जय!!)
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय!! जग०
तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा॥ जग०
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी॥ जग०
अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी।
कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि, हर सँहारकारी॥ जग०
तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया॥ जग०
राम, कृष्ण तू, सीता, बजरानी राधा।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा॥ जग०
दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनि, नव नव रूप धरा॥ जग०
तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू॥ जग०
सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा॥ जग०
तू ही स्नेह-सुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना॥ जग०

मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे।
 कालातीता काली, कमला तू वरदे॥ जग०
 शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी।
 भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी॥ जग०
 हम अति दीन दुखी माँ! विपत-जाल घेरे।
 हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥ जग०
 निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।
 करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै॥ जग०

माँ भगवती की शयन आरती

अब शयन करो महामाया, अब शयन करो महामाया।
 बीत गया सूरज का पहरा, चन्द्रदेव चढ़ आया। अब...
 यह वेला सोवन का आया, शयन करो महामाया। अब...
 रक्त चन्दन का पलंग बनाया, भक्तों ने आन बिछाया। अब...
 अतलश मखमल जरी के बिछौने, भक्तों ने आन बिछाया। अब...
 सर्व सोने के आभूषण मँगाये, भक्तों ने आन पहनाया। अब...
 चम्पा, मरुआ और केवड़ा, हार गूँथ गल पाया। अब...
 अतलख मखमल जरी के दुपट्टे, भक्तों ने आन उढ़ाया। अब...
 कामधेनु का दूध मंगाया, भक्तों ने भोग लगाया। अब...
 सोने का लोट्य गंगाजल पानी, भक्तों ने आन पिलाया। अब...
 कंचन थाल कपूर की बाती, भक्तों ने धाल सजाया। अब...

देवीमयी

तव च का किल न स्तुतिरम्बिके!

सकलशब्दमयी किल ते तनुः।

निखिलमूर्तिषु मे भवदन्वयो

मनसिजासु बहिःप्रसरासु च॥

इति विचिन्त्य शिवे! शमिताशिवे!

जगति जातमयत्नवशादिदम्।

स्तुतिजपार्चनचिन्तनवर्जिता

न खलु काचन कालकलास्ति मे॥

‘हे जगदम्बिके! संसार में कौन-सा वाङ्मय ऐसा है, जो तुम्हारी स्तुति नहीं है; क्योंकि तुम्हारा शरीर तो सकलशब्दमय है। हे देवि! अब मेरे मन में संकल्प विकल्पात्मक रूप से उदित होने वाली एवं संसार में दृश्यरूप से सामने आने वाली सम्पूर्ण आकृतियों में आपके स्वरूप का दर्शन होने लगा है। हे समस्त अमंगल ध्वंसकारिणि कल्याण स्वरूपे शिवे! इस बात को सोचकर अब बिना किसी प्रयत्न के ही सम्पूर्ण चराचर जगत् में मेरी यह स्थिति हो गयी है कि मेरे समय का क्षुद्रतम अंश भी तुम्हारी स्तुति, जप, पूजा अथवा ध्यान से रहित नहीं है। अर्थात् मेरे सम्पूर्ण जागतिक आचार-व्यवहार तुम्हारे ही भिन्न-भिन्न रूपों के प्रति यथोचित रूप से व्यवहृत होने के कारण तुम्हारी पूजा के रूप में परिणत हो गये हैं।’

क्षमा प्रार्थना

परमेश्वरी! मेरे द्वारा रात-दिन सहस्रों अपराध होते रहते हैं। 'यह मेरा दास है'—यों समझ कर मेरे उन अपराधों को तुम कृपापूर्वक क्षमा करो॥

परमेश्वरी! मैं आवाहन नहीं जानता, विसर्जन करना नहीं जानता तथा पूजा करने का ढंग भी नहीं जानता। क्षमा करो॥

देवि! सुरेश्वरी! मैंने जो मंत्रहीन, क्रियाहीन और भक्तिहीन पूजन किया है, वह सब आपकी कृपा से पूर्ण हो॥

सैकड़ों अपराध करके भी जो तुम्हारी शरण में जा 'जगदम्ब' कहकर पुकारता है, उसे वह गति प्राप्त होती है, जो ब्रह्मादि देवताओं के लिये भी सुलभ नहीं है॥

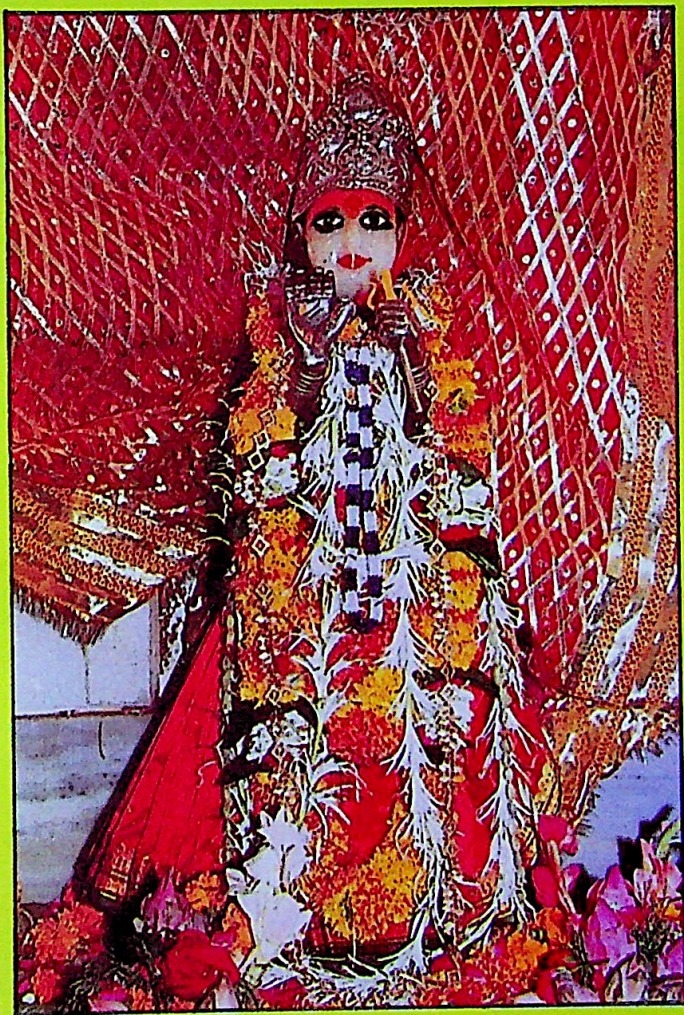
जगदम्बिके! मैं अपराधी हूँ, किन्तु तुम्हारी शरण में आया हूँ। इस समय दया का पात्र हूँ। तुम जैसा चाहो, करो॥

देवि! परमेश्वरी! अज्ञान से, भूल से अथवा बुद्धि भ्रान्त होने के कारण मैंने जो न्यूनता या अधिकता कर दी हो वह सब क्षमा करो और प्रसन्न होओ॥

सच्चिदानन्दस्वरूपा परमेश्वरी! जगन्माता कामेश्वरी! तुम प्रेमपूर्वक मेरी यह पूजा स्वीकार करो और मुझ पर प्रसन्न रहो॥

देवि! सुरेश्वरी! तुम गोपनीय से भी गोपनीय वस्तु की रक्षा करने वाली हो। मेरे निवेदन किये हुए इस जप को ग्रहण करो। तुम्हारी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो॥

जय माता की



गुफा वाली माता जी
(झण्डेवाला देवी मंदिर)

जय माता की



श्री आदि शक्ति माँ वैष्णो देवी

बद्री भक्त झण्डेवाला देवी मंदिर
झण्डेवाला मंदिर, नई दिल्ली-110055